

DPN 6274

Title : नानादेव प्रतिष्ठा विधि NĀNĀDEVA PRATIṢṬHĀ VIDHI

Run. No. 6965

Cat. No. 26

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 23.5 X 8

Folios 71

Lines (in a page) 27

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS वेद तुरंग शैल ४८...

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Scribe - Ganapati

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ नानादेव प्रतिष्ठा विधिर्लिख्यते ॥ गणजागादि ॥ मातृश्राद्धं ॥ आग्नेकुण्ड
पाद विधानं च ॥

P. T. O.

इति पञ्चगव्य विधिः ॥ इति तवकलि विधिः ॥ इति दशद्वार पूजाविधिः ॥
इति गङ्गापति कृतश पूजाविधिः ॥ इति क्षेत्रपाल पूजाविधिः ॥ इति यक्ष यक्षिणी
पूजाविधिः ॥ इति श्रीलक्ष्मी पूजाविधिः ॥ इति स्थाण्डेनार्चन पूजाविधिः ॥
इति शिवशक्ति पूजा ॥ इति देवशक्ति क्रियाविधिः ।
इति षट्त्रिंशति तत्त्वन्यासेन शोधनं ॥ इति देवन्यासः ॥ इति देवार्चन विधिः ॥
इति द्विप्रतिष्ठा विधिः ॥ इति व्रतविधिः ॥

△ अहो वेद तुरङ्ग शैल गमने ॥ मास्याञ्जिते कृष्णाङ्के ॥
श्रीगोविन्दतिथौ सुरेन्द्र दिवसे विष्कम्भ योगे लिखत् ॥
तेपाते हलितापुरे सुनगरे श्रीश्रीनिवासे नृपे
भूदेवो गुरा भूषितो गङ्गापति र्घ्यहं त्वद्वोत्रकम् ॥ ॥ शुभमस्तु ॥



राष्ट्र प्रसाद

नारयणाय ॥

[illegible]

100

11/21/21
 11/21/21
 11/21/21

2015/12/2

ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ नानाद वय
तिष्ठ विधिविस्तरात् ॥ गजजाग
दि ॥ मातृश्रीर्द्ध ॥ अग्निब्रह्म
दविधानं ॥ पूर्वमिन्द्रि
॥ इन्द्रकर्म ॥ स्नानाय वासीनि
॥ ॥ यथारूपमभुय निर्मि
दिवर्त्ति ॥ कीलकावलायनं
॥ यथविधानं ॥ प्रागः स्नाना
दिनिर्यकर्मकत्वा ॥ नेर्म
दिरागमावायुः ॥ स्त्रि
सूर्यार्घ्यं यादयुक्ता ॥ गृ
हनामाद्वरं ॥ कुरुवलिद्व
यंददत् ॥ गुरुननस्कारं ॥
न्यासकारं य ॥ वद ॥ ॐ
गर्नात्वा ॥ ॐ विध्वस्तं ॥
ॐ अम्बुअम्बिक ॥ ॐ अम्बुवा
यदधि ॥ ॐ प्राञ्चिदि ॥ स्वादा
॥ धूय ॥ ॐ धूरसि ॥ दाय ॥ ॐ
तडासि ॥ डायसाग ॥ वलि
विमर्जनं ॥ कयातकुरुस
वाय ॥ कयातमभुयकाय
कावतं ॥ श्वतकुरुवलिया ॥
आवायुदिवादित्रजसर्षयं
धृत्वा नात्राचमुपदिगं य ॥
॥ अमुमनुदीवीकादिप्रद
यदी ॥ ॐ वीरयधूम ॥ ददया
दाग्र्यरूपमभुयप्रविश्या ॥ ने

ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ नानाद वय

सूर्यस्याकुरुयधिमस्यदधि
॥ ॐ तर्जनीकलगीयुजनं ॥ ला
हातचिह्न ॥ न्यामादि ॥ ॐ नम
सुनं मन्यवउतात ॥ यव ॥
ततः यच्चिगवसाधनं ॥ एक
यलं व ॥ गमृगं ॥ अंगुष्ठाद्वि
॥ गमर्ष ॥ कीर्त्तिसकयलं ॥
यं दधि विजयलमवृत्त ॥ अ
श्रमकयलं व ॥ यलमकं
क ॥ गमर्ष ॥ ॥ गमवर्त्तुवि ॥ गव
॥ ॥ गमर्ष ॥ नीलवर्त्तुवि ॥ गव
आया ॥ गमर्ष ॥ द ॥ ॥ गमव
वर्त्तुवि ॥ गमर्ष ॥ ॥ गमव
उच्यत ॥ कयिलायाद्यर्षिप्र
मदायातकनागनं ॥ दधिदुय
वर्त्तुवि ॥ गमर्ष ॥ द ॥ ॥ गमव
तथा ॥ यय ॥ यधिमता ॥ र्ष
द्युर्गवैवग ॥ ॥ गमर्ष ॥
यर्षि ॥ लिङ्गमित्याद ॥ नेर्म
यराजनं ॥ वायव्य ॥ गमर्ष
स्त्रि ॥ ॥ गमर्ष ॥ ॥ गमव
॥ म ॥ ॥ गमर्ष ॥ ॥ गमव
मनुदीवीकादिप्रद ॥ य ॥ ॥ गमव
मायतिदेवतायनम ॥ ॥ ॥ गमव
धिकाया ॥ ॥ वक्रिदेवताय
॥ ॥ गमर्ष ॥ ॥ सामदेवताय
॥ ॥ यय ॥ यधिवर्त्तुवि ॥ ॥ गमव

यदेवताय २ ॥ ॐ नमो ॥ ॐ
 सकातिवदेवताय २ ॥ ॐ निः
 वीतामामि ॥ ॐ वनस्यतिदेव
 ताय २ ॥ ॐ या ४ रुतनी ॥ ॐ उ
 नादनदेवताय २ ॥ ॐ गन्ध
 वा ॥ ॐ वनस्यदेवताय २ ॥ ॐ
 दवस्यत्वा ॥ म ॥ ॐ वन
 देवताय २ ॥ ॐ वनस्ययज्ञान
 ॥ गमयणी ॥ ॐ उपा ॥ १० ॥ गमय
 गमनु ॥ सर्वगामयानुनि
 क्षाय ॥ ॐ सम्ययामिसमाय
 उअधीरि ४ समायधयावस
 नस ० ववती ४ गता ४ रि ४ य
 याका ० समधूमतिर्मधूम
 ता ४ रि ४ यचाकाम ॥ आलाउ
 नी ॥ ॐ ठानयलेत्वासीयोमी
 दम ॥ मुत्रिदमग्रीषामयात्रि
 यत्वायमासिष्टिष्वायूनू
 यथाउयथस्वावतयऊ
 यति ४ यथताममिष्टत्व
 मादि ० सीदवस्त्रासविता
 प्रययउवविष्टिधिनक ॥
 म ॥ यऊनी ॥ ॐ वनस्ययज्ञान
 नी ॥ ॐ ॐ दविष्टु ॥ ॐ नम ४ ग
 रुवाय ॥ चन्दनादि ॥ धूयदी
 यजाय ॥ गमयणी १० ॥ सुग
 ॥ ॐ निर्मलिकाययूयातिव
 क्कज्ञाननिवर्तता ॥ ॐ द्वातय

ययूसवि चिन्तिवक्त्रवृत्ति ॥
 ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॥ यचिगवृत्ति
 रागंरुत्वा ॥ ॥ एकरागंयवस्त्रा
 नाय ॥ ॥ एकरागंअ ॥ मेरुदू
 यात् ॥ ॥ एकरागंयउमान्ना
 दद्यात् ॥ यउमानादिय ३
 गययोननी ॥ ॐ वाचनकु
 क्षामिषादनकु ॥ ॐ क्षामिचकु
 कुक्षामि ॥ ॐ कुक्षामिना
 रिक्तकु ॥ ॐ क्षामिमदकु ॥ ॐ क्षामि
 यायुक्तकु ॥ ॐ क्षामिचविगुंस्त
 कुक्षामि ॥ ॐ मनस्कआयाय
 ताविकआयायताविकस्त
 आयायताविकस्तआयाय
 ता ० ॥ अगु ३ आयायता ॥ य
 रुक्कयिदास्तितागुआया
 यता ॥ निष्ठायायता ॥ ॐ कुक्षु
 समहोरुडाव ॥ धगाय ४ स्वस्व
 धितमेन ० रि ० सि ॥ ॐ त्वम
 दुरि ४ ॥ सि ३ र्नी ॥ ॐ तिर्यव
 गवृविधि १ ॥

ततानववल्लिपूऊनी ॥ ॐ ॐ
 लुद्धीयायनम ४ ॥ ॐ गणनी
 त्वा ॥ ॐ कागदीयाय २ ॥ ॐ अ
 मेअमिक ॥ ॐ तामुवर्द्धीया
 य २ ॥ ॐ विष्टत ॥ ॐ द्वा
 रुक्षिद्धीयाय २ ॥ ॐ द्वात
 यावा ॥ ॐ नागदीयाय २ ॥ ॐ

अध्ववाचद ॥ सोम्यादीया
 य२ ॥ उरुविवातम ॥ गन्ध
 वृद्धीयाया ॥ अस्मिन्वाता ॥
 वायुदीदीयाय ॥ नमावन्
 ॥ य ॥ कोमावीदीयाय २ ॥
 नमामुसथ ॥ धूयदी
 यउयसा ॥ ॐ नुदीय
 कलीलश्च गामुवर्णगुरुकि
 मानानागदीयसुथासोम्या
 गन्धवृष्टाथवायु८१ अर्यव
 नवमादीय ८ कोमावीदीय
 सङ्क८१ पूजयच्छुक्रिय
 द्विच नवदीयनमामुत ॥
 अरुगन्धादि ॥ अमुलविस
 र्जनी ॥ मधुययाचाक्रस्य
 धानसवाचक ॥ ॐ निनव
 वलिविधिः ॥

आवमर्न ॥ या लायस्वाह
 तिरुगुद्वि ॥ गगारुमिक
 (गन) मधनी मधुय ॥ ॐ रु
 वसिरुमित्रस्यदितित्रसि
 विष्टधायविष्टस्यरुवन
 सार्धर्षी ॥ पृथिवीयकुपृथि
 वीष्ट ९ रुपृथिवीमादि ९
 सि ॥ वदिरुचयनी ॥ वदा
 मिथनत्वयववदयवस्था
 वदारुवस्तनमष्टवदारु

या ७ ॥ यवगवृणसिचय ७ ॥
 ॐ त्वम(प्र)शुस्त्रि ॥ अर्घ्या
 गादकनारुक्कणी ॥ ॐ दव
 स्यात्वा ॥ यासादपूजन ॥
 वामुधियतयवक्म (न)नमः ॥
 ॐ यस्त्वामश्मिसमनस्य
 मानीतनत्वाव ध्यामिसवि
 गासकदधरु ॥ अस्मिन्वाक
 सकटाचिलाकस्वानमसंरु
 यस्याकथामि ॥ ॐ श्री ८ भाकि
 व ॥ यमिष्टा ॥ कलावयवम
 लुयरावय ७ ॥ वीदिवद्वनी
 लाजापूजन ॥ ॐ भाकिकाय
 निवास्तुमूर्तय २ ॥ ॐ वीरुय
 धम ॥ ॐ वृष्टिकायविष्टुमृ
 र्त्तय २ ॥ ॐ वृदीविष्टु ॥ ॐ स
 वीत्रिष्टविनामयवक्म (न)
 मुमूर्त्तय २ ॥ ॐ वक्मयज्ञान
 ॥ वीदिविक्तयणी ॥ ॐ वीरु
 यधम ॥ लाजाकयणी ॥ ॐ
 स्वस्तिन ॐ नु ॥ (ग)मस्यलि
 रुअर्घ्यागुखवनआकाव
 जवनउरुनयुक्तवर्न ॥ नि
 व ॥ कि कलम (प्र)समाङ्गीनी
 स्थायावीदिलाङ्गीव ॥ ॐ वायु
 वायादिवीतयगुहानादवृ

25
20
15
10
5
0

उपधमनिवर्गकि कलमदि सुविकलपिनिम
दकइयधरिवाकननयुनयत। उंमममग।
सर्वगध। पचनलावाक। उंनरेनयमननि।

दातय। यत्रिष्ठावृद्धस्यधाव
सु॥ वदनीकलमसनायक
ल्यय०॥ गमयलिङ्गपूव
काय॥ उं नमः० रिवायेति
पूजनं॥ अद्वानन॥ ॥

यजमाननसूर्याधिपूष्यर
जनमूलावाय्यादिदायय
०॥ ततः० रिवाकि कलमपू
जनं॥ निवखवस० रिवा
वसवियत्रीगपूजा॥ चलास
नन॥ यजमानादिन्यासाधिया
गपूजा॥ गंगमदकनसर्व
कलम० रिवनयुनय०॥ उं
०ममगंग॥ उं बुद्धयस्त
नं॥ उं ०द विष्णु॥ उं नमः० रि
रवाय॥ ०गिचलासनविधि०

ततः० पूर्वदानपूजा॥ न्यासादि
॥ उं पूर्वदानाय०॥ उं वटवृक्ष
य०॥ अर्युद्ध०॥ उं तलाया
मि॥ उं यथिवो०॥ उं म्यानाय
थिवी॥ उं यथिर्या०॥ उं यत
यन्त॥ उं सुमस्तलदानाय०॥
॥ उं दानादवी॥ गमनितान०॥
य०॥ उं वलाविगृगम॥ उं या
ये०॥ ध्यान॥ उं यन्मासनस्त
उयादवी॥ एकवकुावउ

कुजा। वदचकाउ० रिर्वच॥
तवधमववप्रदा॥ उं यु० उ०॥
साग॥ उं यन्मासनदवी॥ उं
कास्यासागवाकया॥ वनदा
ग्रीउयादवी॥ तनिमामिसि
दिया॥ ॥ उं विजयाये०॥ ध्या
न॥ विजया० मवधम० रिवा
चकात्यलागदा॥ एकवकुा
उसस्तु० विजयासिद्धिदा
यिनी॥ उं ०द विष्णु॥ साग॥
उं एकवकुाउसस्तु० यीग
वधमचउ० कन॥ सवर्त्तिका
वदवाङ्गी॥ विजया० तनिमा
मद०॥ ॥ मृ० यदाय०॥ उं मृ
निमीउ॥ उं गय० गय०॥ उं
अकनजाय॥ सोमाय०॥
उं ०मदवा॥ उं गमनाय०॥
उं अग्निमूर्द्धा॥ गंगमये०॥ उं
उं ०ममगंग॥ यमनाये॥ उं
य० नद्य०॥ उं मवयवताय
०॥ उं यद्वन॥ मलुलयव
गाय०॥ उं नदीर्य०॥ ग
वयतय०॥ उं गधनानि॥ स
वस्वले०॥ उं यावकान॥ म
हाल०॥ उं धीधन॥ वेक
०॥ य०॥ उं विष्णु० कवीया
लिपवाचय०॥ यथिवानिविम
मानडा०॥ मि॥ या० अस्तु० या० द

१३। उं बुद्धयस्त०॥ उं विष्णु० कय०॥ उं निवगकय०॥
उं यावकान॥ उं धीधन॥ उं मृ० अस्तु० सवस्वनी॥ लकि
य०॥ उं बुद्ध०॥ १२। उं विष्णु० व०॥ उं सदा० निवग०॥ २।

उं मदा० अस्तु० सवस्वनी०॥ यथयति० क
उना॥ धिया० विष्णु० विवा० उति॥

धर्तृयुधिर्वामरितामयूथे ४
स्वाहा॥ साग॥ ॐ अतर्णीयुष्य
संकाशी यंकजासनसंस्तिग
दक्षदिग्धावदक्षसं नमामि
वधुवृषिर्षि॥ ॥ यवधुयय॥
ध्यान॥ यवधुमकवकुंचर
ध्रुवधुसंस्तिग। खमरुठ
कवाणचधनुर्विधुयमद
न॥ वद॥ ॐ दवधुतोदवसा
धावतयावीयतमध्वरु
ल्ययनीडुध्वयरुनयत
माजिह्वरतम्। स्वद्वगधुमा
वदतन्ववीदुथ्यायुमा
निव्वादिहमरुवमध्वमध्व
म्युथिवा॥ ४॥ साग॥ ॐ ध्रुव
धुसंस्तिगचवधुसंस्तिग
धमरिता। विधिसर्वानिकानि
त्यं यवधुययमायदं॥ ॥
यद्वद्वदाय॥ ॐ ॐ यत्वाङ्ग
॥ गतायुगमाय॥ ॐ अद्वाना
जाय॥ वधाय॥ ॐ उद्वध्वसा
य॥ ॐ द्रुस्यतय॥ ॐ द्रुस्य
तय॥ कावय॥ ॐ अथाअ
मान॥ सवय॥ ॐ द्युतनगी
तामध्वनासमध्वताविध्वेद्व
वधुधुमतामध्वरु॥ ॐ उद्व
स्वतीययसाधिसमानासा

स्तीतययसाध्याववृत्स्व॥ के
लासयवगाय॥ ॐ अमिन्नु
॥ मलययवगाय॥ ॐ यातन
द॥ गणायतय॥ ॐ गणन
त्वा॥ सवस्वत्ये॥ ॐ यावका
न॥ मरुतलन्ध्व॥ ॐ ग्रीधुन
॥ वरादाय॥ ॐ विष्णुनृक
स्वीयालिषवाचय॥ ॐ याथिवा
निविममवजा॥ सि। थाअस्व
रायद्रुव॥ ॐ सधस्वमिच
कमागधुध्वगमथाविष्णुव
त्वा॥ ॐ गमयाय॥ ॐ गमद्व
नी॥ सवय॥ ॐ ॐ मान
दाय॥ ॐ द्युयि॥ ॐ कागुत
॥ यदाय॥ ॐ ॐ विध्वदा
॥ यद्वस्वराय॥ ॐ यद्वदा
न॥ यत्नवाय॥ ॐ अय्वसु
यथा॥ यधुनीकध्वजाय॥
ॐ अस्माकमिन्नु॥ दधुयय॥
ॐ द्रुस्यतय॥ ॐ दिवसिया
यनामामितद्वदितडासा मा
मनद्वदि॥ तिवृडा॥ ॐ यद्व
द्वय॥ ॥ यमाय॥ ॐ ध्यान॥ ॐ
तान्मीमदिषावृद्वदधुधुसंस्तिग
यानकी। कालयागध्वरुकोल
ध्वयद्वदिगदिध्वति॥ वद
॥ ॐ यमनयर्त॥ साग॥ ॐ दधु
द्वसायमादवाध्वमाध्वसा

महावल्लभा। त्वं च आवाहयि-
 श्यामि धर्मनाशनमाप्नुत ॥ य-
 ति ॥ ॐ यमयन्त्र ॥ धूपदा-
 यडा यमगा ॥ ॐ महावीर्या
 ॥ ॐ दवदानवगन्ध ॥ ॐ अयं
 वयम् ॥ अगुगन्धदि ॥
 ॐ तितद्विषादावाचन ॥
 तग ४ यश्चिमदावाचन ॥ न्या-
 सादि ॥ यश्चिमदावाय २ ॥ अ-
 ध्वस्तवृक्षाय २ ॥ अत्युदण-
 ॥ ॐ तत्वायामि ॥ यथिवीर ॥
 ॐ स्थानायुधिविना ॥ यथि-
 र्था २ ॥ ॐ यमयन्त्र ॥ कल्या-
 णदावाय २ ॥ ॐ दवावाय २ ॥
 वगताय २ ॥ ॐ चत्वा-
 त्रिष्टम्भ ॥ ॥ धागु २ ॥ ध्यान
 ॥ ॐ कवकासुयागाङ्गी य-
 दस्तुमचतुर्विज ॥ यागभक्ति
 गभुवर्कच धागीगन्धिवि-
 दायिनी ॥ वद ॥ ॐ विष्णुर्न-
 कम्पीर्या ॥ सागु ॥ यीगता-
 कमलस्तुत्र वक्कैकधिय-
 दस्तुका। दानयश्चिमयद-
 स्तुधायीयवीनमाष्टद ॥
 विधागुनम ४ ॥ ध्यान ॥ कम-
 लासनचतुर्विद्विज ॥

गुगदारुया। विधागीकुंकुमा-
 रासा यवीयुष्टिप्रदायिनी ॥
 वद ॥ ॐ दिवावाविष्णुडगवा-
 यथिवामहावाविष्णुडगवन-
 त्रिक्ताग। डरादिदस्तावसुना-
 युगीस्वाधेयचक्रद्विषादागस-
 याद्विष्णुवत्वा ॥ सागु ॥ यदस्तु-
 वदस्तुच चतुर्विद्विस्तु ॥
 रिगा। विधागीकुंकुमारासी-
 नमामियुष्टिप्रदायिनी ॥ साम-
 दाय २ ॥ ॐ अगुगया ॥ दायव-
 युगय २ ॥ ॐ अदवाजाय २ ॥
 गुक्ताय २ ॥ ॐ अन्नात्यविष्णु-
 ॥ गन्धधुवाय २ ॥ ॐ गन्नायवी-
 ॥ गलुक्की २ ॥ ॐ अयस्कनवमृ-
 ॥ कोलिक्की २ ॥ ॐ समुदत्तानुम-
 नाअयस्कनचक्राङ्ग ॥ धादि-
 वाअमडुवन। रगीयत्वात्र-
 उमितस्त्रिवा ० समयामय-
 स्तुमदिवोअवद्वन ॥ गन्धमा-
 दनयवताय २ ॥ ॐ सामाध-
 न्ना। यीयवताय २ ॥ ॐ निवीनि-
 वि ॥ गणयगय २ ॥ ॐ गणनी-
 त्वा ॥ सनसुत्ये २ ॥ ॐ यावकान-
 ॥ महानन्द २ ॥ ॐ ग्रीष्मता ॥ क-
 यिलाय २ ॥ ॐ डवविष्णुविक-
 मस्वावचक्रयायनस्तुधि।

ॐ सामाधेन ० सामाअवकमा ० सामादीन-
 द्धुमयिन्ददाति। सादयविद्विध ० सम-
 यिरप्रवदीथाददासमस्य ॥ ०

धर्माद्यतथानयिष्यप्रययकूय
निमित्तस्वाहा॥७॥मयाय२॥
ॐ गंधद्वारा॥सर्षपाय२॥**ॐ**
ॐ माय२॥द्वयै२॥**ॐ** का
नू॥नकायै२॥**ॐ** ल३विष्टय
॥य३सूराय२॥**ॐ** नकाहन
॥य३वाय२॥**ॐ** अ३मय३
७॥सं३क३ध३जाय२॥**ॐ**
अ३मा३क३मि३नु॥ना३गा३भ३य३
ॐ ह३र३स३ग३धु३दि॥नि३वू३॥**ॐ**
य३ह३क३यू॥॥व३वू३भ३य२॥**ॐ**
न॥ना३गा३भ३ध३व३रू३स३न३
य३धु३नि३वि३ग्र३द३॥॥भ३क३ध३व३ल३
आ३य३व३वू३भ३म३क३वा३स३न३॥**ॐ**
ॐ म३म३व३वू३॥सा३ग॥ना३ग
या३भ३म३का३नि३र३य३॥उ३ल३वा३ऊ३
म३हा३व३ल३॥नि३म३ग३धे३य३वि३ष्ठा३
ता३ना३गा३वा३ऊ३य३त३न३म३॥॥
य३ति३ष्टा॥**ॐ** य३त३य३का॥धू३य
दी३य३जा३य३सा३ग॥**ॐ** म३हा३वी
थ३मि३हा३का३य॥य३व३य३न३व३ग३
ध३व३॥अ३र३य३त्र३य३कू॥अ३ग३ग३
ध३दि॥**ॐ** नि३य३धि३म३द्वा३वा३र्च३न३॥
ग३त३उ३त३द्वा३वा३र्च३न३॥न्या३सा३दि३
॥उ३रू३न३द्वा३वा३य२॥य३रू३रू३का३
य२॥अ३रू३य३रू३॥**ॐ** ग३त्वा३या३
मि॥य३धि३वी३श॥**ॐ** आ३ना३य३धि३
वि३ना॥य३धि३या३॥**ॐ** य३त३य३

न॥सो३ग३द्वा३वा३य२॥**ॐ** द्वा३वा३य३
वा॥आ३वा३या३वा३वा३य२॥**ॐ** च३
त्वा३वि३ष्ट३॥वि३ष्ट३क३ना३य२॥
आ३ना॥**ॐ** ए३का३स३ग३म३व३र्ष३३
वि३ष्ट३क३ना३व३स३स्ति३त३॥ग३दा३व३
का३सि३रि३व३॥**ॐ** च३सि३दि३रू३ल३
य३द३॥व३द॥**ॐ** य३त३वि३ष्ट३स३व३
त३वी३थ३गि३मृ३ग३न३री३म३३क३व३
आ३गि३वि३ष्टा३॥य३स३या३व३गि३ष्ट३वि३
क३म३॥य३धि३दि३य३नि३रू३वे३ना३
नि३वि३ष्ट३॥सा३ग॥ग३या३मी३का३स३
व३उ३व३र्ष३॥क३उ३रू३वी३म३द३
क३॥उ३रू३न३द्वा३वा३य३रू३वि३ष्ट३
क३न३न३मा३म३द३॥॥**ॐ** ग३या३ला३
य२॥आ३न॥**ॐ** ए३का३स३क३यि३
ल३गु३द३॥गु३ल३र३व३द्वा३न३ध३वि३त३
॥र३व३प्रा३क३ग३ध३व३रू३ग३॥अ३रू३रू३
य३रू३सि३दि३य३॥व३द॥**ॐ** वि३ष्ट३
व३वा३ट॥सा३ग॥गु३द३क३यि३ल३
व३र्ष३३॥व३क३क३रू३स३व३द३क३॥
अ३द्वा३स३न३स३दा३सि३दि३य३रू३ग३
य३न३मा३म३द३॥॥अ३ध३व३व३
दा३य२॥**ॐ** ग३ना३य३वी॥क३लि३
य३ग३य२॥**ॐ** अ३द्वा३वा३ऊ३य३क३
॥वा३रू३व३॥**ॐ** क३या३न३धि३ग॥
क३त३व३॥**ॐ** क३रू३रू३॥स३व३
स्व३ह्यै२॥**ॐ** य३३न३य३॥व३द३
ग३ग३यै२॥**ॐ** अ३या३अ३या३न३

वात्रिय ० त्रसन समसृग्मदि ।
 ययस्वानगुग्मगमर्कमास ०
 सुउवर्चसायुजायचधनन
 च ॥ माहृदयवर्गाय २ ॥ **ॐ** न
 दीरु ४ यो ॥ दमकूटयवर्गाय
 २ ॥ **ॐ** अग्माचममृत्तिकाचम
 गिजयधमयवर्गाधमसिका
 नाधमवनस्यनयधदिन ०
 अमग्माचममृत्तिकाचमसा
 मचमगुयचमयनकल्य
 ना ॥ गद्ययगय २ ॥ **ॐ** गद्यना
 त्वा ॥ सवस्वत्ये ॥ **ॐ** यावकान
 ॥ महालक्ष्मी २ ॥ **ॐ** ग्रीधत ॥ न
 त्सिहिय २ ॥ **ॐ** विष्णुपराटम
 ॥ गममयाय २ ॥ **ॐ** गन्धद्वारी ॥
 सव्ययाय २ ॥ **ॐ** व्मावृदाय
 ॥ दूर्वाये २ ॥ **ॐ** काष्ठान ॥ वक्र
 ये २ ॥ **ॐ** त्वञ्जविष्टया ॥ यश्च
 गाय २ ॥ **ॐ** वक्राहर्न ॥ यन्त्र
 वाय २ ॥ **ॐ** अश्वमुयत्रा ॥ स
 मुखधजाय २ ॥ **ॐ** अस्माक
 मित्य ॥ गद्याये २ ॥ **ॐ** वृहस्य
 धुदित्रसि ॥ तिवृडा ॥ **ॐ** यव
 कय ॥ ॥ कवत्राय २ ॥ ध्यान ॥
ॐ कवत्रमधमासान् समसर्व
 खवविग्रह ॥ स्वर्णकायगदा
 रुक्म मूर्तनाभयतिस्मत्र ॥
 वेद ॥ **ॐ** विदग्मउयवका

॥ भाग ॥ नन्दराज ॥ अमर्षवा
 यम्वराजयकीर्तिगा ॥ गदा
 याविधवा ॥ द ४ वृ वनायन
 मासुग ॥ यतिष्ठा ॥ **ॐ** यमय
 ना ॥ धूपदीपजायभाग ॥ **ॐ**
 महावीर्या ॥ दवदानव ॥ अ
 यश्चय ॥ अगगन्धादि ॥ वृ
 तिउरुनदानाचनविधि ४ ॥ ॥
 गतअष्टयदात्राचन ॥ न्यासा
 दि ॥ अष्टयदात्राय २ ॥ स्वदि
 प्रवृत्ताय २ ॥ अष्टयदा ॥ **ॐ**
 गत्वायामि ॥ यथिवी २ ॥ **ॐ** स्या
 नायथिवी ॥ यथिस्वा २ ॥ **ॐ** य
 तयव ॥ मृद्धिदात्राय २ ॥ **ॐ** द
 राधवी ॥ जात्रायनात्रधय २
 ॥ **ॐ** चत्वारिगृग्म ॥ गद्यन
 य २ ॥ **ॐ** गद्यनात्वा ॥ सवस्व
 त्ये २ ॥ **ॐ** यावकान ॥ महाल
 क्ष्मी २ ॥ **ॐ** ग्रीधत ॥ गममया
 य २ ॥ **ॐ** गन्धद्वारी ॥ सव्यया
 य २ ॥ **ॐ** व्मावृदाय ॥ दूर्वा
 ये २ ॥ **ॐ** काष्ठान ॥ वक्राये २ ॥ **ॐ**
 त्वञ्जविष्टया ॥ यश्चसूगाय
 २ ॥ **ॐ** वक्राहर्न ॥ यन्त्रवाय २
 ॥ **ॐ** अश्वमुयत्रा ॥ कर्मदध
 जाय २ ॥ **ॐ** अस्माकमित्य ॥ ग
 कय २ ॥ **ॐ** वृहस्यनधुदित्र
 ॥ तिवृडा ॥ **ॐ** यवकय ॥ ॥

20

15

10

5

आग्नयाय २॥ ध्यान ॥ सका
त्रियश्च विद्या ॥ मन्त्रमाला
कमलुर्ल ॥ दालामालाकूल
नर्क ॥ गकिरुसंज्ञं गसर्त ॥
अग्निर्मूर्द्धा ॥ साग ॥ सर्व
तं आमयादवा न कव ॥ धूमि
राधृति ॥ गगनसर्त ॥ गकिरु
सु मग्निदवनमा मुत ॥ यति
॥ ॥ यतयन्का ॥ धूयदीय
जायसाग ॥ अयश्च यरुम
॥ अगुर्गधादि ॥ वृत्त्याग्नय
दावावर्तन विधि ॥ ॥

ततानेर्मृत्त्यदावावर्तन ॥ न्यासा
दि ॥ नेर्मृत्त्यदावाय २॥ चूत
वृत्ताय २॥ अत्युदण ॥ ॥
गत्वायामि ॥ यथिवी २॥ ॥
नायथिवी ॥ यथिरा २॥ ॥
यतयन्का ॥ कीर्तिदावाय २
॥ ॥ दवायदी ॥ तावत्तय २
॥ ॥ वत्ताविष्टम् ॥ गलयत
य २॥ ॥ गलनान्ता ॥ सत्रसु
त्ये २॥ ॥ यावकान ॥ मरुल
क्ष्म २॥ ॥ ग्रीधत ॥ गमयाय
२॥ ॥ गन्धदावा ॥ सर्वयाय
२॥ ॥ ॥ मानूदाय ॥ दूधयि
२॥ ॥ काष्ठ ॥ नकाथे २॥ ॥
तश्च विष्टये ॥ यश्च सुगाय

२॥ ॥ वत्तावर्तन ॥ यत्तवाय
२॥ ॥ अग्निमुयत्रा ॥ गम ॥ वामन
धजाय २॥ ॥ अस्माकमिन्द्र ॥
स्वप्नाय २॥ ॥ वृत्त्यतं शुदि
॥ तिवृत्ता ॥ ॥ यत्तव ॥ ॥
नेर्मृत्त्याय २॥ ध्यान ॥ ॥ वत्तन
गुं गवावर्त ॥ नीलात्यत्रदल
यर्त ॥ कृपापयातिम ॥ अर्ध
चित्तनं नादसं ॥ ॥ यत्त
दवी ॥ साग ॥ सर्वयताधियद्ये
व नेर्मृत्त्यानीलविष्टरु ॥ स्व
पुष्टसामदवावा ॥ नादसाय
नमा मुत ॥ यति ॥ ॥ यतय
न्का ॥ धूयदीयजायसाग ॥
अयश्च यरुम ॥ अगुर्गधा
दि ॥ ॥ तितनेर्मृत्त्यदावावर्तन ॥ ॥

ततावाय वृत्तावर्तन ॥ न्यासा
दि ॥ ॥ वायवृत्तावाय २॥ ॥ वृत्त
वृत्ताय २॥ ॥ अत्युदण ॥ ॥
गत्वायामि ॥ यथिवी २॥ ॥
नायथिवी ॥ यथिरा २॥ ॥
यतयन्का ॥ यथिरावाय २॥ ॥ दवा
यायदी ॥ तावत्तय २॥ ॥ वत्ता
विष्टम् ॥ गलयतय २॥ ॥ ग
लनान्ता ॥ सत्रसुत्ये २॥ ॥ याव
कान ॥ मरुलक्ष्म २॥ ॥ ग्रीध
त ॥ ॥ गमयाय २॥ ॥ गन्धदा
वा ॥ सर्वयाय २॥ ॥ ॥ मानू

दाय॥दूवार्थ॥३काकुत्ता
कुत॥नकाथे॥३तुजवि
सुदो॥यत्रसूगय॥३नका
रुर्ण॥यत्नवाय॥३अश्व
मुयत्रा॥सर्वनगधजा
य॥३अस्माकमिन्द्र॥धजा
य॥३दुरुस्यनधुदित्र॥
तिवृज॥३यदृक्कषू॥ ॥
वायवाय॥३आन॥३आ
यीनंदविर्गकागं विलासध
जधविर्ण॥यागंरुर्गविरु
गानां रुविर्णसुसमीत्रर्ण
॥३नववाय॥३आग॥३स
र्वयागत्मक॥३येव सर्वस्व
वायुदवगा॥३धजदसाम
राप्राक्का वायुदवनमासु
गं॥३यतिष्ठा॥३यतयन्त॥
धूयदीयजायसाग॥३अर्य
चयस्सुव॥३अगुगंधादि॥
३३तिवायवाद्यावाचनविधि॥

तत॥३गीगानद्वाराचन॥३वा
सादि॥३गीगानद्वाराय॥३अ
गार्कदृग्काय॥३अत्युदरं
॥३तत्वायामि॥३युधिषो॥
३३स्थानापुथिवी॥३यथिष्ठा
॥३३यतयन्त॥३वृद्धिद्वारा

य॥३३द्वाराद्वी॥३तावत्तय
॥३३वत्ताविर्गम॥३गलयन
य॥३३गलनत्वा॥३सर्वस्व
॥३३यावकान॥३महाल
॥३३अश्वत॥३गमया
य॥३३गंधद्वारा॥३सर्वया
य॥३३अमात्रुदाय॥३दूर्वा
ये॥३३काकुत्ताकुत॥३न
काथे॥३३तुजविषुदो॥३य
३३सूगय॥३३नकादुर्ण॥
यत्नवाय॥३३अश्वमुयत्रा
॥३३सूयतिषुधजाय॥३३
अस्माकमिन्द्र॥३३गिगुलाय॥
॥३३दुरुस्यनधुदित्रसि॥३३ति
वृज॥३३यदृक्कषू॥ ॥३३
॥३३आनाय॥३३आन॥३३३गीगानं
द्वाराचन॥३३गिगुलवालिध
विर्ण॥३३गवच्चन्द्रावदार्गचच
न्यमोर्लिजिलाचन॥३३तमो
गान॥३३आग॥३३सर्वविद्याधि
यादव॥३३गीगानानामनामन
३३गुलयालिधवायव॥३३गीग
नायनमासुगं॥३३यतिष्ठा॥३३
यतयन्त॥३३धूयदीयजाय
साग॥३३अर्यचयस्सुवत्र॥
अगुगंधादि॥३३गीगानद्वारा
वाचनविधि॥ ॥

महाकाव्यः

[illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ यथाविचर ॥ सुग ॥
 यन्नगमधियतिद्वेव मननं
 नामविद्युतं ॥ यागालेवसग
 नित्यं अनेकायनमाश्रुतं ॥
 यतिष्ठा ॥ ॐ यतं यन्त्र ॥ धूय
 दीयताय सुग ॥ अर्यं च य
 ऋतवत ॥ अगगन्धादि ॥ ॐ
 लयधद्वाराच्चनविधिः ॥

गगन उद्धवाय ॥ न्यासा
 दि ॥ उद्धवाय ॥ वटवृद्ध
 य ॥ अथुद्धवा ॥ उद्धवाया
 मि ॥ यथिवी ॥ उद्धवाया
 यी ॥ यथिवी ॥ उद्धवाया
 ॥ स्वर्गद्धवाय ॥ उद्धवाय
 वी ॥ उद्धवाय ॥ उद्धवाय
 त्वा विगृह्य ॥ गगनय ॥
 उद्धवाय ॥ सप्तस्व ॥
 उद्धवाय ॥ महालक्ष्मी ॥
 ॥ उद्धवाय ॥ लक्ष्मी ॥
 गंधद्धवा ॥ सूर्ययाय ॥
 उद्धवाय ॥ दूर्वाय ॥
 काण्डाकाण्ड ॥ उद्धवाय ॥
 उद्धवाय ॥ यक्षसूत्र
 य ॥ उद्धवाय ॥ यक्षसूत्र
 य ॥ उद्धवाय ॥ वि

धातुधजाय २॥ ॐ अस्माक
 मित्य ॥ यस्माकाय २॥ ॐ हर
 सतं धुदिन ॥ तिकुज ॥ ॐ थय
 क्षय ॥ ॥ ॐ दयि २॥ ध्यान ॥ ॐ
 यीनयीनं च गुर्वोदं वस्मा ॥
 वगुवाननी ॥ हंसयानं च वि
 जालं दध्माकशूकमगुली ॥
 ॐ वस्त्रयज्ञानं ॥ साग ॥ यद्म
 यानिधुगुमूर्ति मूर्तिस्म
 नतिवाभिर्न ॥ सुष्टिकर्तुस्म
 कानित्यं तस्मै वस्त्रतमास्तु
 न ॥ यतिष्ठा ॥ ॐ यतयन्तु ॥
 धूपदीपजायसाग ॥ ॐ अ
 यं ययस्तु ॥ अगुगन्धा
 दि ॥ ॐ त्र्युधवात्राचनविधिः

ततामगुयमध्वस्तुत्वाडद्व
 यूजय ॥ ॐ वात्स्याधियगय
 वस्त्र ॥ २॥ ॐ वस्त्रयज्ञानं ॥
 ॐ दिनमथलोयानु ॥ सत्य
 स्यापिदिगिमुखं ॥ यासावादि

य २॥ ॐ वन्दादुर्गा ॥ वन्दाय
 २॥ ॐ त्वं विष्टया ॥ प्रजाय
 तियवगाय २॥ ॐ अस्माकमि
 त्य ॥ वथाय २॥ ॐ सयकशु ॥
 क्रिन् ॥ ॐ यस्त्रामुक्षमिस्मन
 स्यमानातं नत्वावध्नातिसवि
 तासूकयध्ना ॥ अस्मिन्नाक
 सुष्टगश्रलाकस्वानमसरु
 यत्याकवामि ॥ यतिष्ठा ॥ ॐ म
 नादूति ॥ जायसाग ॥ ॐ गुला
 अयानिरुगतानि स्कावनालि
 वनागिच ॥ वस्त्रविष्टुनिवा
 ग्मनि ॥ वन्दाकर्वन्नुमसदा
 ॥ ॐ त्र्याद्यालाकयोलाधुजा
 याद्याद्यवदवता ॥ तसर्वस
 नुंवाय ॥ यासादाद्वयपूजा
 य ॥ ॐ अयं ययस्तु ॥ अगु
 गन्धादि ॥ ॐ तिमगुयमध्व ॥

ततागिगधकदुग्धं शिवायक
 नसर्वकलं धूत्रय ॥ ॐ स
 र्वसमया ॥ सविगस्तीर्थनिज

२५
 २०
 १५
 १०

सुसंस्तुतामानन्दस्य
 चवयं द्विषा ॥ वरुं यगु ॥
 अथा अज्ञानवच विषे ॥
 नमनसमसंमदि। ययः
 खानग्र आगमनं मास ॥ सु
 उवर्धसायजयाचधनन
 च॥ यविगमाचनं। विष्णुः
 (६) पूर्ययागुं दन्दि ॥ दित्वा
 ॥ अगुं गमयाना दिवमुया
 नंदयगु ॥ ॥ तग ॥ संपूः
 धर्तुं निकाययगु ॥ शुवा
 धवकस अइवानस्वाना
 दिगयक दानकावगयज
 मानच नि ॥ यजमानाना
 मनक वगायायनानक
 दवपतिष्ठं दानागयसू
 संपू र्णं दित्वा सुदूतमि
 मु ॥ उदवागमु विद्यागमः
 दुं वित्वागमु मितमनसः
 स्यतं मदि वयसू ॥ स्वा
 दावातं धा ॥ ॥ आ
 यायस्वसममुत विष्णु ॥ ॥
 सामवर्धुं रुवावाउस्यसंग
 (६) ॥ सनयया ॥ मिसम
 यनुवाजा ॥ सविष्णु न्यति
 मातिषाह ॥ आयायमाना
 अमुतायसामदि विष्णुवा ॥

प्रत्यक्ष १२

स्युक्तमानि विषय ॥ आयायस्व
 मदि कमसामविष्णु ॥ ॥
 अरि ॥ रुवान ॥ स्वयथसम
 ॥ सखावृद्ध ॥ ॥ आन वत्साम
 नायमत्यनमा वित्तधसू ॥
 ॥ अत्युत्तिका मयागिना ॥ अर्य
 नागिवसमविष्णु ॥ ॥ सुखित
 य ॥ यथका ॥ अत्युत्तिका मयायज
 मिव ॥ ॥ अग्नि ॥ प्रिय वृधाम
 सुकामास्तस्य रुवासा ॥ स
 माउका विवाजति ॥ ॥ यस्य ॥
 यथिवा ॥ ॥ उदवस्यत्वास ॥
 ॥ अग्निना र्थं वरु नतं जस
 ॥ ॥ इयदा दिवमर्चामिनः
 श्विनस्नातामवा दिवपूतं य
 विगुने वा यमाय ॥ ॥ शुभं मु
 मेनस ॥ ॥ उदवयं तमस्वा ॥
 ॥ अग्निना र्थं वरु नतं जस
 नमस्त्वग्यं नम ॥ ॥ यथिवा न
 मडाधधीत्य ॥ ॥ नमावाचवा
 यस्यतथ नमा विष्णु व मरुत
 कवामि ॥ ॥ अत्युत्तिका मयायज
 स्यादवान विदु दिवायक वि
 श्वार्कचसामिक विष्णु मिव
 तन्वग ॥ ॥ उदववासा दिवा
 कादग ॥ ॥ यथिवा मध्याका
 दग ॥ ॥ अत्युत्तिका मयायज

अत्युत्तिका मयायज
 अत्युत्तिका मयायज
 अत्युत्तिका मयायज
 अत्युत्तिका मयायज

कादशस्मृतदवामायस्मि
 मशिवर्ध॥ **३** यनस्त्रादित्या॥
४ आवकनवास्म (६॥ **५** यथ
 मादित्यायेदिनीयास्मृतीये
 स्मृतीयासत्यनसत्ययस्म
 नयस्मायद्रुविश्रुयद्रुविश्रुय
 मरुि४ सामान्नुविमृचध्रुय
 नानवाक्कारि४ युवानवाक्का
 याक्कारिश्चावयवकावेव
 वकावाकृतिरिवाकृतया
 थाभकामासमर्द्धयनुस्त्रा
 दा॥ **६** सम्वर्द्धनका० रुवि
 वाद्युगनसमादिलोव्वसुति
 ४ सम्वर्द्धि४ समिन्द्राविष्णु
 दवर्द्धनकादवनराग
 द्धुयत्स्वाद॥ **७** अन्धवाग
 नकृणयविस्मन० कृण० उ
 ययमनकृण० अष्टपुगा
 नसर्वानिद्रादुयाग॥ **८**
 हिमस्यत्वाय० रु॥ **९** हिम
 स्यत्वाउवायनोभेलयवि
 व्यामसि॥ उरु० द्वादिना
 दुवागिर्द्धि० गुरुषजं॥ गी
 तद्वादिनादुवागिर्द्धि० गुरु
 षजं॥ **१०** अन्धकायप्रियजन
 यंश्रीष्टीम४ निगुवागमन॥
 अज्ञानयद्रुयुगोश्चददये
 ममधूयन॥ वियुलवनव

काकाश्चित्रजागवद४ का
 माय॥ मीधुवद्रुयुगोश्चद
 ० मुरोतव॥ चिंमन्केलादि
 गयीवद्रुयुवर्द्धनमाशुता
 अविद्रुयवद्रुयुवर्द्धनमा
 गवस्यमयुयथा॥ **११** न्यु
 गंदधाउववृ० मरुिषिश्च
 रु॥ गवनिधनयानुऊय
 त्ववद्रुगजसा॥ कयिलजटा
 सर्वरुद्राणिप्रत्यग्ददे
 वगं॥ वन० चित्रवसाप्रिर्म
 मयुगोश्चद्रुयुवर्द्धनमा
 दित्यस्यतियावद्रुजति
 चन्द्रमा॥ यावद्रुग४ प्रवद्रु
 मितवद्रुजीवत्वयासदा॥ य
 नकनयकाव० मारुमाना
 नजीवति॥ यववामयका
 वा० य४ जीवति सजीवति
 ॥ एकसदनरुद्रकनद० न
 त्ववियुलन॥ यधीत्वर्द्धि०
 माननत्वैकचक्रु० द०
 न॥ **१२** मिहिमस्यत्वा॥ **१३**
 आवमनचन्द्रनगश्चवका
 वमृतामूलनेवयवमर्षा
 तिलाद्रुमिद्रुयुग॥ **१४** न
 खमृगुहात्वा॥ तन४ ययय
 दानं॥ **१५** साय० रु॥ **१६**
 मन्नाथ४ सनुकलगोस्मृति

लवैश्वानरादिदि। एव वगा ४
सूत्राणाव वदा रु वनु गुन ॥
वाक् ॥ ८ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
आधर्म विजयी रु वनु ॥ ४ ॥
आ ४ मुखिन ४ सनु द ॥ ४ ॥
दया मु । अस्म द्य उ मान स्य
स ग ८ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
ना वा ग्य मे श्व र्य उ न ध न ल
द्वी स न तिस न न न वृ द्धि न मु
॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
रु वनु । सर्व सत्वा ४ मुखिन
४ सनु । य र्य न्य ४ काल व र्य
रु वनु । अ म क वा रु ४ ४ ॥
य वृ द्धि न मु । सर्व वि धि य वि
य र्ग म मु ॥ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
सु ग ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
दा य इ न खिल य द ४ साम
व द ४ थ रु स भ का थ र्वा दि
ती र्य ग । न य थ व द न श्रा द्ध
न व द्ध र्वा र्थ । न य गी य स्य
न गु न य न म य नि य र्ग
म ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
मृ ति रु व द्ध र्वा र्थ न य र्ग
नृ यी व वा रु ४ ॥ १ ॥ ४ ॥ ४ ॥
ति रु व द्ध र्वा र्थ य द ग ग
मु । लि ट्वा रि मा ग र्वा रु
४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४

दगताणीलिवर्गोपसिद्धाणा
 नृणां बालवृद्धारुवतिरुव
 तवाणीलिकालप्रवाधा व
 दामाणासगर्भोऽयमुक्तय
 पदानित्यनृणां गिवाङ्गा ॥ २ ॥
 यथयत्नसंस्कारादिनिवि
 दिनिनिवासीस्त्रिणादवगा
 या कृष्णवावक्रिमक्षक
 लणायनिवृत्तामणुलेस्तु
 षुलवा। न सर्वमनुदवा
 अरिमगववदामनुसंगा
 षनृवा मृदामनुदिदीना
 अङ्गनयविविधिः ८ द्वा
 षादमस्व ॥ ३ ॥ यद्वा
 श्ववत्त्वमनिधिगुटि
 कायाडकारुच्यवत्त्वयाणा
 लदिवृत्तिमिदुवनमः
 रिगादिवृत्तिनामलिश्वः
 सिद्धिद्विष्टोषधीनां यनपू
 वविज्ञानां भवुत्तमनुवाः
 दं वेतइस्ययसादात्सरा
 वरुवगासमिदव ८ मुस
 न ॥ ४ ॥ ॐ न्यायालाकपाला
 ८ स्वस्वदिनिवर्तिना ८ स्वस्व
 मृदा ८ स्वयुक्ता आदित्या
 दियदं भवमतिमुसदाडा
 न्मदवा ८ स्वयुक्ता ८ मृदा

लक्ष्मणकलशं लिङ्गमाका
 शं वृषभनन्दनं यथ्यमाला
 यरुगलकसमं नृपचन्द्र
 कवेदिं । कन्दोसकसम
 दाकुजगिनिखिखवांसक
 यागालयाथो वदाश्रुत्वा
 विवाचदशदिशवदनं
 यागुवादिबुलिङ्ग ॥ १२ ॥
 कालवर्षनुमघा ॥ किं कि
 त्रयिचसदासस्यसंयुक्त
 रुगा वदन्ता ॥ सनुविषा ॥
 सकलनृयगिजाध्वसुवे
 त्रियजाथ । सत्त्वानयालन
 चयरावगुसंरुगाकावु
 णमार्थयूका निष्ठात्माह
 यमादनिवसगुसगर्गस
 यजंयुग्यग ॥ १३ ॥ गं
 जादं दानि विष्णुं सवकल
 मरुवं यावनरुवुव ॥ स्व ॥
 सव्ययिवाफि विष्णुं मनिडा
 ननमिगं रास्वनगाकिरुसं
 । उभाधु । स्यनवात्माकन
 कमयकवसूक्ष्मसूक्ष्मति
 सूक्ष्मं वन्दवभूद्रककुंदि
 अनिखिलगुर्व ॥ १४ ॥ गं
 गंरुवर्क ॥ १४ ॥ गंमयलि
 ग ॥ नमामिदवदवंगिगं

मयंगंरुवंगिवा सर्वयवि
 गुरुद्वं वयंयत्रगवाक
 ध्वं ॥ गं ॥ नमामिगिगिगि
 दवां नीलात्यलविधात्रि
 लां । उगगीमागकावृया
 संसावस्त्रिकात्रि लां ॥
 कलगाया ॥ दवां मगहृषी
 गंयुगमयिचयने ॥ यल
 वे ॥ कुरुमूर्ति ॥ गंदावेसी
 थभाथे ॥ कसमरुलसुगं
 (ओषध्वावादिनले ॥ दीवे
 शुगान्कागोमलयगनु
 सेदृष्टिसिन्दुवद्वीयथेन
 वयध्वये ॥ स्वकलजविधि
 वर्गनमयुक्तकुरु ॥ ॥ यथा
 दवस्यसुबुल ॥ यथायस्य
 चयवस्य मगुलं सर्वसं
 वृगं । सर्वकामार्थदं यथ्यवि
 नयित्वानमाम्यदं ॥ आदि
 त्यमगुल ॥ शुक्र ॥ गीगंयु
 मालीवसुमगिनय ॥ संहि
 कथार्कयुग ॥ कयुद्धं वय
 जन्मामृगकनउवृगामधु
 संस्त्रादिन ॥ १५ ॥ वाञ्छनक
 गुमाल ॥ युनवयिदशदिक
 दानयालययुक्त ॥ सर्वय
 गंनिकार्जवियूलकरुल

5

20

15

10

5

दमधुलं नमामि॥ मय्य
 अथ कलः॥ शुद्धः स न
 जिवयसा दयनर्मसर्वरू
 गकीश्वरं सानन्दसूत्रना
 यकस्यरुगवान्मयूक
 मय्यदवागोऽविवदं शु
 वान् रुवयदवामादिगकी
 श्वरं व्याधिः स कविनाः
 गकसुखयकामयूजयः
 पादिमां॥ गलयनि॥ विः
 ध्रुवराथ नि॥ वलि॥ नि
 त्यानन्दयत्रमिनि॥ सगु
 षा॥ अं यूर्ध्वचन्दमहात्माः
 न चित्रं आवाहकं शुभं
 ऊत्मादिदवता सर्वं नमा
 मिसगगविवरं॥ सूर्यसं
 ॥ नात्रायलसं॥ निवेसं॥
 नमः॥ निवायः स न्नायय
 चवकुधुगायच॥ नमस्मि
 गूलरुसाय सर्वपायान्
 कायच॥ ॐ हृदयवगासं
 ॥ कलेश्वरं उ गन्नाथं
 हृदयीसमन्विन॥ सर्वका
 मसमृद्धिं नमस्कयनम
 श्वरं॥ गुरुदवगासं॥
 यासायदासनं क विव

॥ उवाच सुमयका ॥

॥ २ नागवाभयका निवेदि ॥

लकटिकटीयप्रयणायगा
 की गरीवावर्तनासिस्तन
 रुवनमिगाशुक्रवक्रातुना
 या॥ लक्ष्मीदिवीर्जुनं नम
 लिमयखविगासापिगाह
 मकर्म निर्यसायप्रहस
 वसतुममगृहसर्वमाङ्गल्य
 यूका॥ विश्वकर्मा॥ विश्व
 त्माजगतामी॥ विश्वकः
 लयित्रं श्वरं॥ विश्वव्यापः
 नदागुच नमस्कविश्वक
 र्म॥ नागचक्रादि॥ अ
 कलीयदनागनु श्रील
 क्ष्मीगलयवगास्तुनाधिय
 नमस्कमुक्तेश्वरं सगगनि
 म॥ शर्वस्वपुल्यकुराका
 वदाश्वत्थानववच॥ आयु
 वृद्धिययत्ननयजमानस
 यच्छत्रा॥ गवः॥ द्वावैष
 दास्यं तु विद्याः स्वादावसं
 स्मिता॥ प्राप्तादात्राखिलाः
 श्राव सत्याश्रायथिवीग
 धा॥ यदिदायास्त्रियरूपा
 आचार्यस्यविगयन॥
 मनुमदाविहीनन गाम्ना
 य॥ नदायन॥ मागुद
 दादिहीनत्वानवगन्तियच
 विगयन॥ शु विगीनाः

दिर्गगन जया धायन क
 मसि ॥ वद ग म्मा इ गु द न
 क्रिया हीन न द हि ना । द
 उ म रु मि न त्स र्व क र्व नु नि
 व म न ल ॥ दि श्व व र्व नु म घा
 ज ल म यि च नृ ण स नु व त्ता
 दि वा था । वा ज्ञान ४ या ल य
 नु य मि दि न व स धि वा ऋ
 ण या स म स ॥ द व कू न य
 रु या उ उ ग नि नि च वा ४ स
 पु स यी ग मा ना सु द्वा मा ना
 ध ना य ४ स ग स उ न स र ह
 म्मी क र्मु म्मी म्मु रु ड ॥ स न ४
 स नु नि व न र्व स र ह मि ना
 वि श्व म्मा या द या वा ज्ञान
 ४ य नि या ल य नु व स धि धः
 म्मि णि ४ स र्व द ॥ का ल स
 म मि व र्वि ण उ ल म र्व ४ स
 उ य ज्ञा ४ य ण या मा द न्ना
 ध न वृ द्धि वी ध व स र ह रु ष
 पु मा द ४ स या ॥ जि द्वा द ॥ वा
 ल य न च व ण कू ष्म ण दि न
 या ना ल्म वा गु द्ध लि खि ग य
 मि त लू क य इ द न मु । मा
 ग ही न य दि क य णि ग य ण
 मा न वि न स म ग त्स र्व न
 द यि च म या सु ग म न रु द

म ध्वी ॥ अ क्क ना ल्क ना वा यि
 य न्मा या मा हि त र्ग ॥ दं तु
 म रु सि द व र्ग । द्वा मा य म्मी रु
 ना यि रु ॥ गु र म म्मु स र्व उ ग
 ना य व दि त क नृ ण रु ग ग ॥
 ४ । था वा ४ पु या गु ण नि स र्व
 ग स र्वी रु वं तु ला का ४ ॥ त्वं ग
 मि ४ स र्व रु ना नां स लि ता
 त्वं च वा च व । अ न्म च व ण
 रु ना नां द द्वा त्वं य न म ध्व न
 ॥ क र्म ण म न सा वा च । त्व
 ण ना न्या ग मि म्मा । म न रु
 न क्रिया ही न रु कि द्वा न ग
 र्वे व च ॥ उ य द्वा मा र्व ना ही
 न र्ग नि त्थि म्मा त व । अ
 र्ग वा क्क रु न च । त लू व
 य रु ता ग न ॥ शा रा रु ग व न
 य था त्वं म या क र्म नि व र्व
 ता । नृ ना धि क मि द क र्म
 द्वा म्मा गि यू र्ण ता क र्म ॥ ॥
 य रु मा ना म न न रु व ना इ या
 न मि ॥ अ गु ग धा दि ॥ म लु
 ल रु य थ ण रु य ण ॥ १ ॥ १ ॥
 मा द्वा ण वि स र्ज नी ॥ द व
 रु णु ल क ल ग्म ग्मा वा या
 गी व दि ॥ ॐ ॐ द वि षु ॥ ॐ
 आ जि षु क ॥ ॐ अ मि र्म वि य
 व मा न या ४ उ न्य य वा हि

।तमीमरुमहावर्यस्वाहा॥
यस्यकृमागृहदुर्वित्तम
।प्रवर्द्धयात्वं।तस्मैदवाजुः
धिववनयश्चवृक्षस्यति
॥८॥उक्तिश्चवृक्षस्यतद
वर्यत्वमरुमहा।उपययनु
मवृत्तमृगान॥८॥उत्तयागु
र्ववासवा॥वृक्ष।विसर्जने
॥८॥उत्तविष्णु॥युगीतविस
र्जने॥८॥कस्तुविमृशति स
त्वाविमृशतिकस्मेत्वाविमृ
शतितस्मेत्वाविमृशति।यावा
यवदुसारा।गमसि॥वृक्षा
कृशमाचर्न॥८॥समिजियान
जायडाषधय॥८॥सनुइमि
जियानतस्मेसनुयास्मान्दुः
श्चिचवर्यद्विष्म॥८॥वृक्षा
कृशानयुगीतादकनात्मा
नमरिषकंकावयत्॥य
गीतस्तुसमिधंशुदूयात्॥
वृक्षस्य॥८॥सचुनदयनसमि
धक्षम॥८॥कनायकर्मत्
स्वाहा॥८॥अकृतायकर्म
त्स्वाहा॥८॥तनूया।प्रसिः
तन्वभयाप्रयुद्ध।प्रस्याः
यमददिवश्चाद्या।प्रसिव
चमिददि।अ।प्रयभतन्व

उत्ततन्मआयुषामधमिद
दिसविनाआयधागुमधमि
दवीमनस्वगीआयधागुम
धामग्निनीदवावाधतुयिष्क
वमृजा विष्णुगमनिचमआ
यायगावाष्ठा।गयद्॥८॥ग्रा
गय।भवत्॥८॥ग्रायुषं
मद।प्र॥८॥कययस्यग्रायुषं
।यद्ववषुग्रायुषं।तन्नामु
ग्रायुषं॥८॥गृगस्तुसमना
ललाटग्रीवायाददि।गवा
रुमूलददिगिलकंकावय
त्॥८॥कलशदिविमर्जने॥
८॥उत्तयगमस्य॥८॥यमक
लशयमानिकग्मग्मनवा
समर्थर्ण॥८॥दवाग्निआवाय
द्विष्म॥८॥समर्थर्ण॥८॥यस्तु
हासनाहनस्वस्तिकासन
यजमाननिर्मर्चने॥८॥उत्त
क्ताहर्न॥८॥अध्रवाचद
॥वर्त्ति॥८॥उत्तवस्यत्वा॥अध
यागदकनायुद्धर्ण॥८॥वर्म्
दायय॥८॥उत्तवमा॥८॥यविगु॥
अरिषकंतामुयागदय्यर्ण
निधाय॥८॥गिवशकिकल।ग
नअरिषकसमूहकर्मम्॥
८॥उत्तवस्यत्वा॥८॥अग्निना

यमकलशदयकावअरिषक
विद्यमानव॥८॥

कगदावकायकं कुससगुल
कायसधूतात्रतात्रतमनव।४

१४ अनन्ताग्रथस्वाहा॥८

२७७ लिमायकना निष्कृन्तिमायाः क्षमस्वीकृत्य।

॥ अर्घ्याग्निकर्तुं नाम्ना ॥
मुखीयत्य ॥ उयस्यर्गनि ॥
आचमनं ॥ सूर्यासादिधाय
॥ अगुर्गंधादि ॥ ततः सर्वत्र
अपानरिवाद्ययम् ॥ ॐ ति
वंधाकविष्णुयगिष्ठासमाफा

पूर्वोक्तं वदुर्थदिवसचतु
र्थीकर्मोकावयत् ॥ ॥

अथ वदुर्गुत्तमं लेलगमनं
मास्यां विनक्तुं कर्माणि ॥ गति
नक्ति ॥ सूर्यश्च दिवसवि
स्तुमथा ॥ गतिरवत् ॥ नयाल
ललिताय वसुनगे वशीणी
निवासनय ॥ रुद्रवागुणरु
षितागणयति यज्ञं त्वदा
नागकम् ॥ ॐ ॥ गुरुमस्तु ॥ ॥

॥ ॐ न्द्रादि ॥ ॐ गतावमि ॥ १० ॥
॥ अयादि ॥ ॐ अरुममन ॥ ८ ॥
॥ नवग्रह ॥ ॐ आरुमन ॥ १० ॥
॥ अष्टममादि ॥ ॐ वासुधस ॥
॥ सूर्यादि ॥ ॐ अग्निमा ॥ ४ ॥
॥ रुतायुगमादि ॥ ४ ॥ ॐ अरुनाय ॥
॥ शिवगति ॥ ॐ नमः शिवा ॥ ॐ दैवि
॥ उन्म ॥ ॐ ता अस्मा सुदना ॥
॥ निद्रा ॥ ॐ नचक्षुद्वेदिन
॥ यथा ॥ ॐ वक्ष्यमानं ॥ प्रलीत ॥ ॐ दैवि
॥ ॐ वद ॥ ॐ वदामि यतर्त्त ॥ अक्षया

यवकावृकमववत् ॥ यथा म
गवदः ॥ गतिजावमगवदः ॥
न ॥ ॐ गतामगवदः ॥ गतिव
वामगवदः ॥ गतिमदीनास्याम
गवदः ॥ गतिर्यथा ॥ गवदः ॥ गता
१ सूर्या ॥ ॐ गतिवानामासि ॥
१ यगिष्ठा ॥ ॐ सूर्यगतिवत् ॥
१ गताकल ॥ ॐ गतानां ॥
१ गुरु ॥ ॐ वक्ष्यमानं अति ॥
१ रुद्र ॥ ॐ नमावदुर्गमय ॥
१ यागिणी ॥ ॐ उतागवदसं ॥
१ अम् ॥ ॐ नमस्तु वदमन्य ॥
१ वाम ॥ ॐ वक्ष्यमानं नयथा ॥
१ गति ॥ ॐ द्योः गतिवत् ॥
१ यष्टिका ॥ ॐ गुम्बकं यत्ता ॥
१ वसु ॥ ॐ वसुवमवसति ॥
१ मकर्मचमं गतिवत् मथय
१ मयमयमं ॥ ॐ व्यावमगति
१ मययत्नकल्यनाम ॥ ॥
१ लक्ष्मीकल ॥ ॐ मदा अर्धस
१ यस्तुतीयवत् तयतिकरुना
१ धियाविष्ठाविवाजनि ॥ ॥
१ वक्ष्मा ॥ ॐ अवक्ष्मनवा ॥ ॥
१ यलीत ॥ ॐ दैवि विष्णुविव ॥
१ वद ॥ ॐ वदोसि यतर्त्त द
१ यावदयवस्थावदरुव
१ नमस्तु वदरुया ॥ ॥

20

15

10

ת

ॐ अमृतं ॥ ॐ अग्निर्मूर्ध्नि ॥ ॐ न
मृत्याय ॥ ॐ यन्मयवा ॥ ॐ वा
यवाय ॥ ॐ नववाय ॥ ॐ ह्री
न्मनाय ॥ ॐ नमीश्वर ॥ ॐ अ
ध्वस ॥ ॐ नीलि यदा ॥ ॐ उ
च्चैः ॥ ॐ वदन्मय ॥ ॐ ति
पूवदिद्वानयूतान् ॥ ॥

१ विष्णुपतिष्ठानसाकगवादिमा
रुकायाम४॥ ॥ क॥ न॥ ॥
ॐ क॥ व॥ का॥ लि॥ र्या॥ ॥ मुख
रु॥ ॥ ॐ आ॥ ना॥ वा॥ य॥ का॥ नि॥ र्या॥
॥ द॥ दि॥ ल॥ न॥ गु॥ ॥ ॐ मा॥ ध॥ व॥
॥ सु॥ र्या॥ ॥ वाम॥ न॥ गु॥ ॥ ॐ
॥ ग॥ वि॥ न्द॥ य॥ र्या॥ ॥ द॥ दि॥ ल॥
॥ क॥ ॥ ॐ ॥ वि॥ षु॥ धृ॥ नि॥ र्या॥ ॥
॥ वाम॥ क॥ ॥ ॐ ॥ म॥ धृ॥ मू॥ द॥ न॥
॥ नि॥ र्या॥ ॥ द॥ दि॥ ल॥ घा॥ ॥ ॐ
॥ मृ॥ नि॥ वि॥ का॥ म॥ कि॥ या॥ र्या॥ ॥ वाम॥
॥ घा॥ ॥ ॐ मृ॥ वाम॥ न॥ द॥ या॥ र्या॥ ॥
॥ द॥ दि॥ ल॥ ग॥ ॥ ॐ ॥ प्री॥ ध॥ न॥
॥ म॥ ध॥ र्या॥ ॥ वाम॥ ग॥ ॥ ॐ
॥ द॥ दि॥ ल॥ क॥ द॥ र्या॥ ॥ डा॥
॥ ॐ न॥ य॥ द॥ ना॥ र॥ य॥ र्या॥ ॥
॥ अ॥ ध॥ न॥ ॥ ॐ न॥ य॥ मा॥ द॥ न॥ ल॥ का॥
॥ र्या॥ ॥ ॐ द॥ द॥ न॥ र्या॥ ॥ ॐ ॐ
॥ वा॥ स॥ द॥ व॥ ल॥ र्या॥ ॥ अ॥ धा॥
॥ द॥ न॥ र्या॥ ॥ ॐ ॐ ॥ कि॥ र्या॥ ॥ स॥
॥ न॥ स॥ र्या॥ ॥ मृ॥ दि॥ ॥ ॐ अ॥ य॥
॥ अ॥ म॥ य॥ नि॥ र्या॥ ॥ मृ॥ ख॥ ॥ ॐ अ॥
॥ अ॥ नि॥ वृ॥ द॥ न॥ र्या॥ ॥ द॥ दि॥ ल॥
॥ वा॥ द॥ मू॥ ल॥ ॥ ॐ क॥ च॥ कि॥ उ॥
॥ या॥ र्या॥ ॥ कृ॥ र्या॥ ॥ ॐ र॥ व॥ ग॥ दि॥
॥ र्म॥ र्या॥ ॥ म॥ नि॥ व॥ ॥ ॐ न॥

॥ नि॥ पु॥ रा॥ र्या॥ ॥ अ॥ गु॥ लि॥ मू॥
॥ ल॥ ॥ ॐ य॥ स॥ र्या॥ ॥ अ॥
॥ गु॥ ल्या॥ ॥ ॐ ॥ शि॥ व॥ र्या॥
॥ वाम॥ वा॥ द॥ मू॥ ल॥ ॥ ॐ द॥ लि॥
॥ वा॥ ली॥ र्या॥ ॥ कृ॥ र्या॥ ॥ ॐ क॥ मू॥
॥ लि॥ वि॥ ला॥ मि॥ नी॥ र्या॥ ॥ वाम॥ म॥
॥ लि॥ व॥ ॥ ॐ ॐ गु॥ लि॥ वि॥ डा॥ या॥
॥ र्या॥ ॥ अ॥ गु॥ लि॥ मू॥ ल॥ ॥ ॐ य॥
॥ लि॥ वि॥ डा॥ र्या॥ ॥ अ॥ गु॥ ल्या॥
॥ ॐ ॐ अ॥ गु॥ लि॥ वि॥ र्या॥ ॥ द॥
॥ दि॥ ल॥ या॥ द॥ मू॥ ल॥ ॥ ॐ म॥ कृ॥ न्द॥
॥ वि॥ न॥ द॥ र्या॥ ॥ डा॥ न॥ नि॥ ॐ ॐ
॥ न॥ न्द॥ या॥ द॥ र्या॥ ॥ गु॥ ल्या॥ ॐ
ॐ न॥ दि॥ म॥ नि॥ र्या॥ ॥ अ॥ गु॥
॥ लि॥ मू॥ ल॥ ॐ ॐ न॥ व॥ दि॥ र्या॥ ॥
॥ अ॥ गु॥ ल्या॥ ॐ ॐ न॥ व॥ का॥ नि॥
॥ स॥ मृ॥ दि॥ र्या॥ ॥ वाम॥ या॥ द॥ मू॥
॥ ल॥ ॐ ॐ न॥ दि॥ र्या॥ ॥ डा॥
॥ न॥ नि॥ ॐ ॐ कृ॥ षु॥ कि॥ र्या॥ ॥
॥ गु॥ ल्या॥ ॐ ॐ स॥ र्या॥ वृ॥ दि॥ र्या॥ ॥
॥ अ॥ गु॥ लि॥ मू॥ ल॥ ॐ ॐ स॥ द॥ गु॥ म॥
॥ नि॥ र्या॥ ॥ अ॥ गु॥ ल्या॥ ॐ न॥ ॐ
॥ वि॥ द॥ मा॥ र्या॥ ॥ द॥ दि॥ ल॥ या॥
॥ ॐ य॥ ॐ न॥ व॥ मा॥ र्या॥ ॥ वाम॥
॥ या॥ ॐ ॐ न॥ द॥ न॥ मा॥ र्या॥
॥ ॐ य॥ ॐ व॥ र्या॥ म॥ दि॥ नी॥

경

15

10

ת

25
20
15
10
5
0

न्यायशः॥ॐ ह्यदिदं लाक्या
ला॥ॐ वी॥ॐ कृतयुगाय॥ॐ
तुगायुगाय॥ॐ दायनयुगा
य॥ॐ कलियुगाय॥ॐ
मृगवदाय॥ॐ यज्ञवदाय
॥ॐ सामवदाय॥ॐ अ
थर्ववदाय॥ॐ आदित्या
दिनवग्रहस्था॥॥ॐ य
तियदादिनिधिरा॥॥ॐ
ॐ अविद्यादि अष्टाविंशति
नक्तशस्था॥ॐ विष्कम्भा
दिसकाविंशतिथा॥ॐ गस्था
॥ॐ मेधादिद्वादशानिस्था
॥ॐ तनयूजन॥ॐ धृयदीय
जायकाग॥ॐ नमास्तु नका
यसकम्॥ॐ अगुगन्धादि॥
ॐ गिदवाचनविधि॥

१ वासुकलग्नपूजा॥ॐ वासु
कलग्नयनमः॥ॐ आना॥ॐ
पीतवर्णचतुर्वर्द्धि वयसं
वपुगाननी॥ॐ सुकाकास्य
कुण्डं रुसयानविचिक्तयता
ॐ वक्रयज्ञान॥ॐ काग॥ॐ के
वलेलासुसृष्टिनिखिलजन
गुर्वदमकावगार्नाना
विशेषविष्टिपिठवनगुरा

दं दवगानीचष्टी॥ॐ नीपी
नीसुदकाखिलग॥ॐ जनकय
नयगायताक॥ॐ वदायमनु
मूर्तिचतुर्द्धा यगीयप्रउ
नीमदीनी॥ॐ अगुगन्धादि॥ॐ
गिदवासुकलग्नपूजाविधि॥

१ तताग्नमयलिगपूजा॥ॐ
सद्याजातादियचवकुंस्था॥
॥ॐ आना॥ॐ तावथादामयीलि
गीनिर्वसुवर्द्धिपिठवक्रा
कुशादिनेयवर्द्धि॥ॐ अगुगन्धा
वनवर्द्धि॥ॐ नमः॥ॐ शिवाय
॥ॐ काग॥ॐ हिमकुलुनिरीद
वर्द्धि॥ॐ गमकुटन्धुकात्रिणी॥ॐ सर्व
यायदुर्द्धि॥ॐ वन्द्ययन
मीनिर्वी॥ॐ अगुगन्धादि॥ॐ
गिग्नमयलिगपूजाविधि॥

१ लीतनयाजवस॥ॐ गिग्नलव
कविक्का॥ॐ गानिकयुष्टिककल
गपूजा॥ॐ गानिकयुष्टिकक
लग्नस्था॥ॐ॥ॐ आना॥ॐ सर्वथा
गानिककल्लिलाकानायुष्टि
दायक॥ॐ गथायक॥ॐ विराया
थ॥ॐ पूजयद्यज्ञसंनिधि॥ॐ
यो॥ॐ गानिक॥ॐ शुभकयजा॥
काग॥ॐ गानिकायनमः॥

उं नारायणाय विद्महे वा
 सुंदराय धीमहि तन्न बुद्धे
 पुष्याय नमः ॥ आदिना नाय
 नानामयसी ॥

थं विष्णुपूजा निमथनता हव न वि
 सायमशवेन धन विस्मननवाया ॥

ततानागर्घ्यपूजा ॥ **ॐ** अर्नगा
 दिअरकलनागनाडाखा २
 ॥ **ॐ** न ॥ **ॐ** अनकाद्यक्षना
 (गर्गः खखलुगुरुवासनी
 यद्वः रिवादिदुष्टा ॥ मधि
 नार्थवितावयत् ॥ **ॐ** नमा
 मुसर्थयो ॥ **ॐ** न ॥ (ध्वगव
 (धर्मरानाग ४ सर्वत्रत्वे ४ स
 मन्विग ४ धनाध्वनसमाका
 वसुसो नित्यनिमानम ४ ॥ अ
 गुगन्धादि ॥ **ॐ** तिनागर्घ्यपूजा ॥

र्यः पूष्टिकायनमानम ४ स
 दाममाध्वनकां कनूत्वि वि
 द्रुष्टा नय ॥ अगुगन्धादि ॥
 ॐ तिनागर्घ्यपूष्टिकावर्न ॥

ॐ नमावक्त्राणां अथ अग्निपुत्रुयाय द्रुक्कयन विधिर्लिख्यते ॥ हवर्षे अर्वावेत अगया ४ ध
 नयर्गकाव कागुलिपूचलर्गः कलखचर्कगयाव याक्रायागुलिचिक्त्रिध्वन अग
 सयश्चस्यर्ग ॥ ॥ अग्निपुत्रुयर्गः अथ सयनकुयावगमठक्कयक ॥ धर्गध्वनकाव य
 डामानता सियावधुतिक्कयुयाय ॥ ॥ चरुनर्गयस्वानन कुयक ॥ स्वानकलखिडा
 नकावर्ग ॥ ॥ **ॐ** अग्रादि ॥ अयडामानाना अतनकुवुगायायनार्थमग्निपुत्रुयाय द्रुक्कय
 ननिमिखार्थ **ॐ** अग्निपुत्रुयार्थनिम ४ ॥ वाअ ॥ यजमानयुष्यसाजर्न वाक्कल सम
 र्यर्ग ॥ वाक्कलान ॥ अग्रादि ॥ सूर्यार्घ्य ॥ ॥ धन अगसलखिनरुस्य ॥ ययामुगनअ
 गसस्त्रानयाय ॥ वन्दन ॥ सिन्दूर ॥ उडुम ॥ स्वानर्ग ॥ ॥ न्यासादि ॥ स्वानर्गन ॥ दानाच्च
 नी ॥ **ॐ** नत्वायामीति ॥ **ॐ** न न्यायेनम ४ ॥ **ॐ** नादिभर्मविरु विज्ञानियायुर्भयुतिगिर्गुसग ॥ अ

म

तन्दनन्दवालोभरुगः सोराग्रययसः ॥ ३ ॥ धार्यायद्वां धर्मोस्मि विनिनाजाप्रतिष्ठा
 गः ॥ १ ॥ रुडायेनमः ॥ २ ॥ रुदाना अग्निना द्रुगारुदागतिः ॥ ३ ॥ सरुगरुदा अर्धनः ॥ ४ ॥ रुडाड
 तयससुयः ॥ ५ ॥ रुजायायेनमः ॥ ६ ॥ यनासमत्ससा सरुवस्त्रिनागनुदिरु त्रिसर्द्धता
 । वनमाग अरिस्त्रि ससुयः ॥ ७ ॥ त्रिक्तायेनमः ॥ ८ ॥ त्रिनासवविर्द्धग अर्धनमः ॥ ९ ॥ निवारु
 र्ययन । पृथुर्क वसुवदस्त्रम ॥ १० ॥ पृथुषिवादनः ॥ ११ ॥ दृष्ट्मैथेनमः ॥ १२ ॥ निवारु
 वयुजास्थामानृष्यस्त्रम ॥ १३ ॥ माद्यावायुथिवा अरि साचीमोत विर्द्धमावनस्यति
 ॥ १४ ॥ धनमालकावदयठय ॥ १५ ॥ धूयदीय ॥ १६ ॥ नडासि ॥ १७ ॥ मनादूनि ॥ १८ ॥ पतिष्ठा ॥
 धनं धूनकाय कर्मपूजायाकाव ॥ १९ ॥ लासगससुसि कवगन थायावदक्कि ॥ २० ॥ विरय ॥ २१ ॥ डा
 डामकास्वान । अरुयाचोर्त्विजालवक्ताय ॥ २२ ॥ अग्निपूजुकाया धमय सयकानसं द ॥ २३ ॥

सस्त्रिस्त्रिक्वाययगायननायकाव वीरिनाय लुयद्रडाकायद्वत । र्यचनत्तन ॥ २४ ॥
 न अगया ॥ २५ ॥ धनं कारिस्त्रिक्वा ननगयक ॥ २६ ॥ स्वस्त्रिना मिमीता ॥ २७ ॥ व्यादि ॥ २८ ॥ व्याद
 स्त्रायनयाय ॥ २९ ॥ अथवाक्केलपूजा ॥ ३० ॥ दक्कि लभदानं ॥ ३१ ॥ न्मासलिकाय ॥ ३२ ॥ वाचननलखन
 अग्निथकविय ॥ ३३ ॥ चन्दनादि ॥ ३४ ॥ अग्निपूजुकाय दस्त्रयनविधिः ॥ ३५ ॥
 ३६ ॥ नमावद ॥ ३७ ॥ अथचरुर्थी कर्मकावयगु ॥ ३८ ॥ कलुस्त्राकनरा ॥ ३९ ॥ अग्निपूजुकावय
 गु ॥ ४० ॥ गासगयाकलनात ॥ ४१ ॥ सगुल ॥ ४२ ॥ गभजु ॥ ४३ ॥ वलि ॥ ४४ ॥ गभजस ॥ ४५ ॥ कोमाजीकुजागाकावत
 स्त्रानकल ॥ ४६ ॥ दवस्त्रानयागर्थ्यामृत ॥ ४७ ॥ धनं सगुलया रिनगय ॥ ४८ ॥ यथविधि
 ननकल ॥ ४९ ॥ कर्मकावयगु ॥ ५० ॥ तिलादिति पूज्मैयर्थिक ॥ ५१ ॥ यथकर्मसद्वञ्जनक
 ॥ ५२ ॥ तिलादिति पूज्मैयर्थिक ॥ ५३ ॥ यथकर्मसद्वञ्जनक

॥ तिलादिति पूज्मैयर्थिक ॥ ५४ ॥ यथकर्मसद्वञ्जनक ॥

युजायाय ॥ ॐ अथादि ॥ न्यासाद्ययागयुजा ॥ यथैर्मृगनय वस्त्रान ॥ स्नानकलश
नस्नानयाय ॥ चन्दन यक्षायावीत यथ ॥ स्त्रुत्ताच्चनससायाव सलाय युजा ॥ धू
यदीयनेवद्य ॥ उताया ॥ साम ॥ ॐ नमस्तु नकायसफ ॥ छाका यथ ॥ अगर्गि ॥ अदि ॥
मधुलविसर्जने ॥ अथ गिग त्वनग्रुवधयस्यु ॥ तायन कालाव ॥ ॐ मनादू
ति ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॥ गगठकृण ॥ ॐ क्रम ॥ ॐ यथ ॥ ॐ क्रम ॥ ॐ यथ ॥ ॐ क्रम ॥ ॐ यथ ॥
न्यादि ॥ दीययट्टिकाकाम ॥ ॐ मूर्चिवार्चय ॥ गगध्यायप्रिककाम ॥ ॐ वलिकनर्ग ॥
दक्षिणमार्ग ॥ ॐ मूर्धवयागर्ग ॥ ॐ अया अग्रान्वचात्रिषड्वृत्तिविगभाचर्ग ॥ ॥
थनवि ॥ ॐ यकर्मयाय ॥ अचार्यने यजमानन पूर्वस्वरेण सुष्ठु कलसंवा ॥ ॐ

यगुलिगाफाकडलिकायत्ताफागैधिस्थितया ॥ वा ॥ ॐ अथादि ॥ मया पूर्वचर्मस्त्रुत्ता
न्याग्रामसर्वदवगा ॥ सुधीगा ॥ ॐ मया वा ॥ ॐ मया वा ॥ ॐ मया वा ॥ ॐ मया वा ॥ ॐ मया वा ॥
ॐ रुक्मिणीचनर्गस्वया ॥ च ॥ ॐ ध्वनायदवाय ॥ सुधीगिसुमनारव ॥ ॐ किपृष्टिकर्ग
तिथ्य ॥ यगुयोगविचर्जन ॥ नागा विजयमायागिसर्वसिद्धिरुलेय ॥ ॐ मयिसृजति
सुष्ठु कर्म मयिगिष्ठतिगिष्ठति ॥ विसर्जक विसर्जक मयिगिष्ठतिगिष्ठति ॥ ॐ जोषीय
धुष्टु रुष्टमफाया ॥ ॐ यगा ॥ ॐ यगा ॥ ॐ यगा ॥ ॐ यगा ॥ ॐ यगा ॥ ॐ यगा ॥ ॐ यगा ॥
ॐ ॥ ॐ सिरकत्वा ॥ ॐ यच सुष्टु ॥ ॐ का सखत्रस्वियाग ॥ ॐ दिगयगाय ॥ ॐ ध्वनकाकायावध
कीसग ॥ ॐ निर्मात्वा स्नानकायावधकिष्ठयागसर्ग ॥ ॐ धकियागलसयुगासनययवायाव

चक्र २

ध्यायन्तवन्तं ॥ गगनधनुषं ॥ निमग्न्यायन्तवन्तं ॥ लयगसंविधननखलुधायावन्तं ॥
 गुलिसंविधं ॥ त्रिधायावन्तं ॥ गगनधनुषं ॥ गगनधनुषं ॥ गगनधनुषं ॥ गगनधनुषं ॥
 यद्वययायनमः ॥ १० ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥
 वीचलं ॥ कालांशं ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥
 कालं ॥ वीचलं ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥
 च ॥ साकल्यकमलं ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥
 रं ॥ टीकाकावधवाचं ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥
 य ॥ यदीय ॥ निवध ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥ यद्वययायनमः ॥
 २ ॥ ३ ॥ स्मरण ॥ चन्द्रमूर्ध्नि ॥ कर्ग ॥ निवध ॥ चर्मवर्ग ॥ सय ॥ पुर्य ॥ गजचर्मधवा ॥ द्रवधु

नाथनमोऽमुं ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 नायचलुमूर्ध्नि ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 रूनिमिहार्थं ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 ॥ ॥ ब्रह्म ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 मत्संधनक ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 निसकलसंकाय ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 लंगनाजायागकाय ॥ अंगगन्धादि ॥ तगायजमानं ॥ नय्याकगज ॥ तंधुत्वा ॥ १० ॥ विषय
 सिद्धनभादनि ॥ समुल ॥ स्वान ॥ सं ॥ यचिचसुग ॥ अग्नित्रया ॥ लाजलकाखा ॥ तवथार्थचसु

दिष्ट

5 10 15 20 25

क२
गुकाग॥ धननिधिय॥ यय द्यक॥ त्वं विष्टया॥ अधिकाया॥ श्रीर्घ्यायुत्वा॥ गजान
यधि मभाय॥ यजमाने नयुर्ध्वसायाय वन्द्यकलङ्गाय॥ वाक्सीरुगवन्नन लोहं गकुनूय
धनं धिय॥ साकात्सरुसने गुत्वं जिदिवायवगा विर॥ मानवीकनूमाजित्य॥ यालिगीगन्तु
मञ्जुर्ल॥ अर्चितासिमयाथव॥ कृतामणुलपुर्व्वर्क॥ मयाकता स्ययरूमा यथगक्षाननू
यत॥ वन्द्यमिन्द्राय कलङ्गा तदराग्यविर्गयत॥ सोमानसनमनसा गृध्रगविस्त्राधि
या पुनस्त्वनविकीर्तय॥ एतसर्व्वकर्मार्गयि॥ गगानमिन्द्र॥ लवङ्गाय॥ वाक्सीरुग
आर्णीर्वायविय॥ गजानकमध्वनाल॥ सन॥ यित॥ धनं वन्द्यकलङ्गाय विधि॥
आदित्यकलङ्गा अग्निदिनमालकास्तु विय॥ वन्द्यकलङ्गा कर्मसमाय॥ धनमस्तु॥

श्चतुर्थीयकूमयावल काय
नायनिष्काय गलकलङ्गा न
चिद्रु कमला पूजा वाहन॥
धनविस्त्राया॥ दगुविस
आवायक्याय गुनूकलङ्गा
युधिचिद्रु अवदकमला अ
लिनि इसनसनाव इगवक
मला पूजावाहन॥ धनयक
याय॥ यथाकर्मसज्जनक
हानपूजा॥ धर्मनियनिसः
कृतिपूजार्तिद्वयपूजाया
ययाग॥ ॥ अग्रयकलङ्गा
अग्नियाग कृणुयारुनन॥ अ
गिणीकलङ्गा अगमसर्ग॥ अ
लिलकलङ्गा यवयाग॥ गल
कलङ्गा चतुर्थी कृद्रु कायना
यसक्याययाग॥ गुनूकल
गचतुर्थी कृद्रु दगुविसगय
कनक्षप॥ वन्द्यकलङ्गा
इदं किं पुंडमाल साथा
नाय साकात्सरु धकीसवा
ठ वतुर्थी कृद्रु सखमालस
वायकनक्षप॥ निम्नल्ल
स्वानलखसवायचतुर्थी कृ
द्रु॥ यमकलङ्गा यमानिक
दक्षिणदिगितव॥ मगसं
तवक्षप॥ यक यकलीवा

कर्मसज्जनक

मनिकसंगव २२

नयायिवनतं ॥ नागच. नाग
 या. नागकृणुं धिसतं ॥ श्री
 लक्ष्मी धृष्टिसतं ॥ कोनाया
 गडुर्धकलण ॥ सद्भिनिमाक
 यात. अधकलण ॥ यिजिसि
 यात. उन्मकलण स्वस्तिकवि
 क्र ॥ आचार्ययोग. कृणु क
 लण. षट्पंगविद्रु ॥ वृत्तियनि
 सुवर्ण १ धात्रविय ॥ वृत्ति
 नकुवकावकलण ॥ जवसत
 स्यसिगुणकाय ॥ निखात्रन
 पुस्तक. चतुर्थी गामाल ॥
 १ यथा दवस्यवताचन ॥ धर्मय
 नक ॥ विधिधर्मदटाधय
 स. निवर्णकिकलण ॥ मृत्पुञ्ज
 य ॥ आदित्य. धंतिवि ॥ दव ॥
 ००० कलण ॥ अग्निवृणु. वः
 लि. गवज्जा ॥ ग. प्रस. कोमा
 नागर्ध. दृस्वायिस्वा ॥ धतस
 कउउकास्वानतमान ॥ का
 वृत्तकादृगा व. डा. दावृत्तकाका
 य ॥ जायसा. ययुर्नधून
 क. मणुलमडास्यत ॥ धन
 निवि. ग. यनिविधिगा १४ द
 य ॥ धनत्रि. धर्मनियनियं
 वसूणका. जानका वृत्तिल

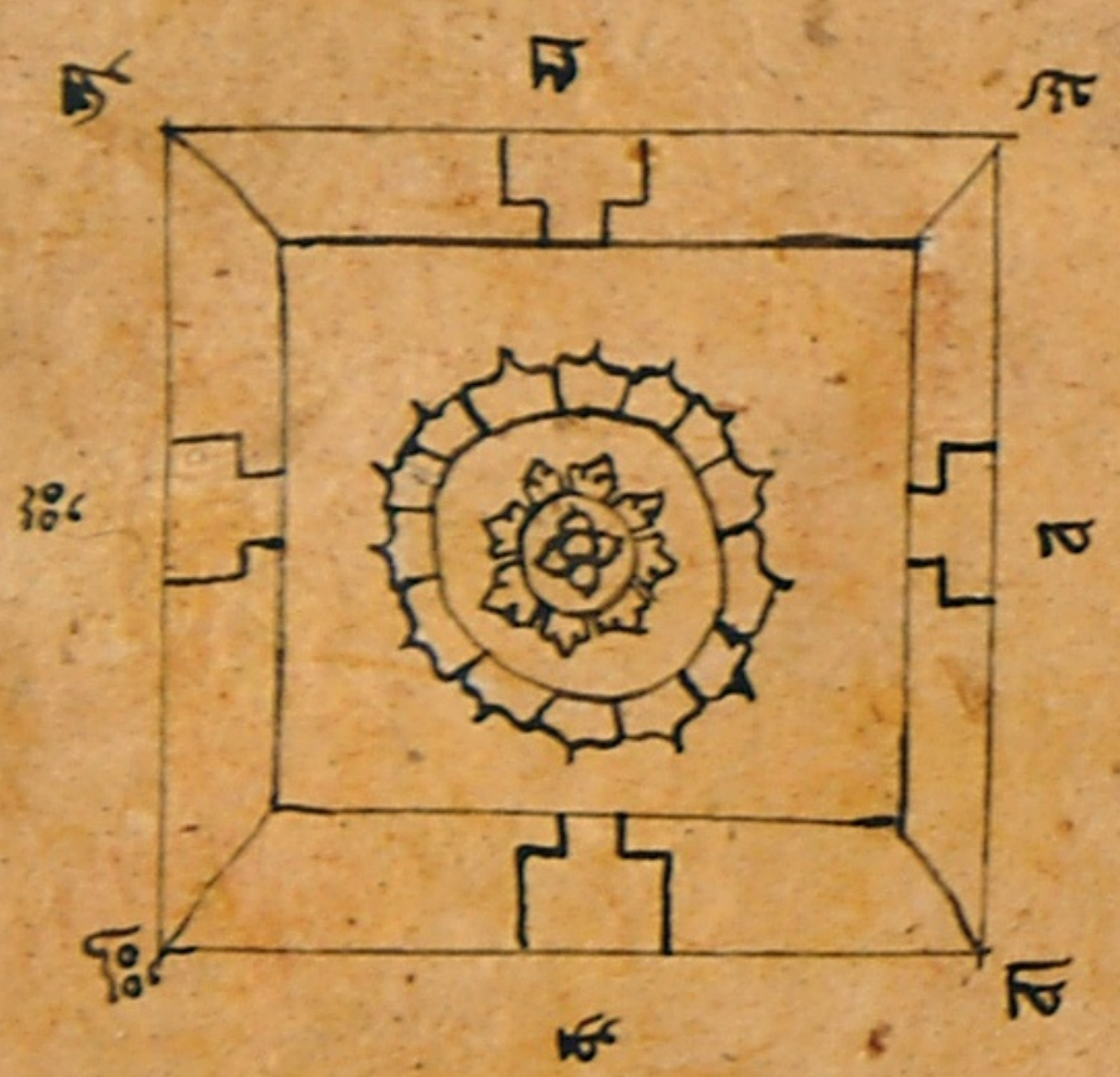
न (म) धनयाय ॥ आकृति धा
 न १४ दयाया वयजमानयनि
 त्वाय. पुनिष्ठागायरात्र ॥ थ
 (धनिमणुलयास्वाननचूय
 क ॥ यचसूणकारिकाय ॥ ॥
 १४ त्वनत्र अग्निनडापि वा
 रुयत ॥ आचार्यवलिपान
 २ विचक ॥ अधनलिअग्निवृ
 लुविसर्जन ॥ वा. कु. वा. फ. (न
 नय १० न ॥ **डं** मया धूर्ध्वसंस्क
 धायादि ॥ धनधूनकाव ॥ व
 लि विसर्जनयाचक ॥ धनन
 लि. थ. नलिस्वासवायकनकु
 यधनिवातयाव ॥ कुवानग
 क ॥ धननलिवाययाविधि ॥
१०० अद्यायविमरु मरुत
 वायधीमहि. तन्नात्रुदुपवाद
 यात ॥ **डं** मयायागायविमरु
 मरुतवायधीमहि. तन्नात्रु
 दुपवादयात ॥ **डं** वामदवा
 यविमरु. मरुतवायधीम
 हि. तन्नात्रुदुपवादयात ॥ **डं**
 तन्नुत्रयायविमरु. मरुत
 वायधीमहि. तन्नात्रुदुपवाद
 यात ॥ **डं** वीजनाय विमरुस
 दातिवायधीमहि. तन्ना. वीजय

वायव्याग्न ॥ ॥ ॐ नमः कलश ॥ आ
 दित्यकलश ॥ मृत्पुत्रय ॥ दव ॥
 वनूककलश ॥ गणकलश ॥ गुनूक
 लश ॥ सूर्यनाग ॥ धीलकलश ॥ धन
 यरुमण्डपसंनययद्रुतारुगसा
 ॥ मरुगसार्थकास्थितमाल ॥ चतु
 र्धिकात्रिच्छात्रलवान ॥ अनेकया
 दक्षिणवा ३० आकवा ३ कायमा
 ल ॥

शतकगनूतना नायलपुकायाय ॥ यथाविधान ॥ आनन ॥ ॐ नमः कलशसर्वा
 दधी ॥ क्लिप्तमसकसस्युगी ॥ गदाणीयधनविताम ॥ दक्षत्रकुवनपुयनी ॥ का
 दिसूर्यसर्मागडा ॥ गयकाचनसंनिर्गा ॥ नानात्रादिसंयुक्ता ॥ नानाकनपल
 चिन्ती ॥ बुद्धाल्मदिगलधीग ॥ नेत्रवेदसदसंयुगी ॥ कलापकगुपी ॥ अत्र
 गालुवेर्नृत्त्यलपिगी ॥ तुलायुयापिनीदधी ॥ शिशुकाभकनृपिणी ॥ सर्व
 सिद्धिगलधीग ॥ सर्वदवेर्नृमस्कगी ॥ सर्वनिद्रमयीन्दवी ॥ सर्वलकलम
 युगी ॥ नाकनाडंध्यनी ॥ दद्या ॥ सुत्वज्ञासर्वसिद्धिनी ॥ आननपुष्य ॥ शिर्षाड

लिगुयं ॥ वयं येषु ॥ धूपदीपादि ॥ जाय ॥ कागु ॥ उं प्रीदात्तामिनि नम्यर्वयक
गन्तो नित्यं विसमाधाय ॥ इ गंधमादिवस दधा नि विदिमागृक्ता किं गमयात्
ग४ ॥ क्तास्तु मि गृहायि गमय ववसा स्वयं चिद द्वा रु नि सो वध्नी यु मिमाय
माय गय गं ४ स्तु ध किं गाय नम ४ ॥ उं प्रीकी त ध्वन र्म यु ग ध्व क म ला ना र्ध
विदं गमिय ४ स्तु ध्वय मुव स न्म कोष्णु रु ध न ४ प्री वत्स वि का रु दि ॥ रु स्मा रु
क लयं ग या गी नि र्म ॥ रर्व वच कं रु नि ॥ सा या द्वा व न र्व य का कि स न
न ४ को की ध्वनी संय ग ४ ॥ अ गु र्म धादि ॥

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍



25
20
15
10
5
0



5

10

15

ॐ अथ वाना रुक ॥ ॐ अथादि ॥ अऊमानस्यानकव गीशायनय क्लानकव लिङ्गया च्चेन कर्तुं हेतु आर्थाया धीनमश्व
 व्यनमश ॥ प्रथराऊनस्य निरुक्तयार् ॥ ॥ अऊमानस्यानकव गीशायनय क्लानकव रत्नायन
 प्रवर्धितसमृद्धकल ॥ ॥ च्चेन निमित्तार्थ ॥ ॥ हेतु आर्थाया धीनमश्व प्रवर्ध ॥ ॥ प्रथराऊन
 यऊमानस्यानकव गीशायनय क्लानकव ॥ ॐ वाना रुक ॥ ॐ अथादि ॥ गवामिणि
 व ॥ अऊमानस्यानकव गीशायनय प्रवर्धार्थमिदि ॥ गवामिणि व ॥

11 24 18 16 14 12 10 8 6 4 2

11 24 18 16 14 12 10 8 6 4 2

॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥

ת